© 2025 IJNRD | Volume 10, Issue 6 June 2025 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# मौर्य शासक राजा कुणाल – एक ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विश्लेषण

विपुल तिवारी

छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय ,लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

**सारांश**

भारतीय इतिहास के सबसे प्रभावशाली और सुव्यवस्थित साम्राज्यों में से एक मौर्य साम्राज्य, न केवल अपने राजनीतिक प्रभुत्व के लिए जाना जाता है, बल्कि इसके शासकों की वैचारिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि भी इसे अद्वितीय बनाती है। इस साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध सम्राट अशोक महान के शासनकाल में भारतवर्ष ने एक नए बौद्धिक और नैतिक युग का प्रवेश किया।लेकिन इस गौरवशाली परंपरा में एक ऐसा पात्र भी है जो स्वयं सम्राट नहीं बन सका, परंतु जिसकी कथा अन्याय, षड्यंत्र, धर्मनिष्ठा और सहनशीलता की अमिट छवि छोड़ती है – वह पात्र था राजकुमार कुणाल। कुणाल की कहानी इतिहास और किंवदंती के संगम बिंदु पर खड़ी है। वह अशोक के उत्तराधिकारी हो सकते थे, किंतु राजनीतिक षड्यंत्र और पारिवारिक ईर्ष्या ने उनके जीवन को एक दुखांत दिशा में मोड़ दिया। यह लेख कुणाल के जीवन, उनके राजनीतिक अधिकार, धार्मिक योगदान, सांस्कृतिक प्रभाव, और ऐतिहासिक विमर्श का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**परिचय-** राजा कुणाल मौर्य सम्राट अशोक के पुत्र थे। उनका जीवन एक ऐसे राजकुमार की कहानी है जो योग्य होते हुए भी सत्ता से वंचित कर दिया गया। उनका नाम भारतीय इतिहास में न केवल एक त्रासद शाही पात्र के रूप में बल्कि नैतिकता, आत्मबल और बौद्धिक धैर्य के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से पद्मावती, को अशोक की प्रथम पत्नी माना जाता है जो एक शांत धर्म परायण और कल्याणकारी रानी थी। कुणाल के जन्म का काल लगभग 260 इस पूर्व माना जाता है जब अशोक स्वयं मगध का राजकुमार था और अभी सम्राट नहीं बना था। कुणाल का जन्म सम्राट अशोक और रानी पद्मावती के पुत्र के रूप में हुआ था। वह

अत्यंत सुंदर, तेजस्वी और बुद्धिमान बालक था। 'कुणाल' शब्द का अर्थ होता है हंस की एक प्रजाति या 'तेज दृष्टि वाला पक्षी', जो उनके तीक्ष्ण और दूरदर्शी स्वभाव को दर्शाता है।उन्होंने युद्धकला, राजनीति, शास्त्र और बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त की और राज्य कार्यों में भी पारंगत हो गए। कुणाल की बुद्धिमत्ता करुणा और नेतृत्व क्षमता के कारण अशोक के उत्तराधिकारी के रूप में उन्हें उपयुक्त समझा जाने लगा।

**उत्तराधिकार की राजनीति**

सम्राट अशोक के कई पुत्र थे – कुणाल, तिवला, महेंद्र (श्रीलंका में धर्म प्रचारक), जलौक (कश्मीर से जुड़े कुछ ग्रंथों में वर्णन), आदि। लेकिन कुणाल को ही वास्तविक उत्तराधिकारी माना जा रहा था। अशोक की दूसरी रानी तिष्यरक्षिता, जिससे उसने बौद्ध धर्म अपनाने के बाद विवाह किया तिष्यरक्षिता चाहती थी कि उसका पुत्र गद्दी पर बैठे। अशोक ने स्पष्ट रूप से उत्तराधिकारी की घोषणा नहीं की थी। इसका लाभ उठाकर तिष्यरक्षिता ने महल के अंदर एक गुट बना लिया।राजनीतिक षड्यंत्र, वैवाहिक ईर्ष्या, और उत्तराधिकार की अस्पष्टता ने कुणाल की स्थिति को कमजोर करना शुरू किया।जब अशोक वृद्ध होने लगे और उत्तराधिकार को लेकर दबाव बढ़ा, तब तिष्यरक्षिता ने कुणाल को राज्य से दूर भेजकर उसके विरुद्ध एक षड्यंत्र किया, जो आगे चलकर उनके जीवन की सबसे दुखद घटना बनी।

**अंधता का षड्यंत्र**

कुणाल की अंधता की कथा 'दिव्यावदान' और 'अशोकावदान' जैसे बौद्ध ग्रंथों में

मिलती है। यह घटना ऐतिहासिक रूप से पुष्ट नहीं है, लेकिन इसकी प्रतीकात्मकता और प्रभाव भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, तिष्यरक्षिता ने अशोक के नाम से कुणाल को एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था — "राजकुमार की आंखें निकाल दी जाएं, लेकिन यह न बताया जाए कि आदेश किसका है।"यह आदेश दोहरे अर्थ वाला था, जिसे दरबारी लिपिकों ने शाब्दिक रूप से लिया।राजाज्ञा समझकर कुणाल की आंखें निकाल दी गईं।यह घटना भारतीय इतिहास में क्रूर राजनीति और अन्याय का ज्वलंत उदाहरण मानी जाती है।

**कुणाल का आत्मबल और धर्मपथ**

अंध हो जाने के बाद भी कुणाल ने जीवन से हार नहीं मानी। उन्होने इसे धार्मिक परिक्षा मानकर स्वीकार की । उन्होंने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह नहीं किया, न ही सत्ता की मांग की। उन्होने अपने जीवन को धर्म, सेवा और करुणा के मार्ग पर समर्पित कर दिया। वे बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए और धम्म प्रचारक बने।उन्होंने जीवनभर किसी से प्रतिशोध नहीं लिया, न ही गद्दी की मांग की। यह दर्शाता है कि वे कितने संयमी, सहनशील और उच्च चारित्रिक व्यक्ति थे। कुछ समय बाद जब अशोक को तिष्यरक्षिता के षड्यंत्र का पता चला, तो वह अत्यंत दुखी हुए। उन्होंने तिष्यरक्षिता को मृत्युदंड दिया। किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। कुणाल अंध हो चुके थे और राजधानी से दूर जा चुके थे

## कुणाल की पुनः प्रतिष्ठा, बौद्ध धर्म का विस्तार और दक्षिण भारत की यात्रा

राजा कुणाल का जीवन अब साधू की सेवा और संतुलन दर्शन का आदर्श बन चुका था लेकिन उनके जीवन में यह यात्रा केवल अंतर मंतर सीमित नहीं रही उन्होंने अपने अनुभव और आत्मज्ञान का प्रयोग समाज और राज्य को जागृत करने में कियाजब कुणाल वर्षों बाद पाटलिपुत्र लौटे तो उनका स्वागत जनता ने अत्यंत

भावात्मक और श्रद्धा भाव से किया। लोग उन्हें □अंधे संत□ के रूप में मानने लगे एक जीते-जागते बुद्ध की छवि समझने लगे। सम्राट अशोक ने अपने अंतिम वर्षों में कुणाल को सार्वजनिक क्षमा याचना की। उन्हें □धम्मदूत□ का पद प्रदान किया राज्य के प्रमुख धार्मिक कार्यों में उन्हें सर्वोच्च स्थान दिया। बौद्ध भिक्षुओं और संघ ने कुणाल को स्थविर (वरिष्ठ) का सम्मान दिया । उन्हें बौद्ध विचारधारा का प्रतीक और साक्षात धम्म का वाहक माना जाने लगा। कुणाल ने अपने जीवन के तीसरे चरण में गंग, जमुना, नर्मदा और गोदावरी घाटियों में भ्रमण किया। आश्रम और विहारों में धर्म का उपदेश देते, अंधविश्वास और जातीय संकीर्णता का विरोध करते, ग्रामों में महिलाओं बच्चों और वंचितों को शिक्षा देते। उन्होंने वार्षिक धम्म महोत्सव की परंपरा शुरू की जिसमें; लोकनाट्य, धम्म संवाद, ध्यान अभ्यास और संगीत द्वारा धर्म का प्रचार होता। सभी जातियों और वर्गों के लोग बिना भेदभाव के भाग लेते। उनकी शिक्षाओं को □कुणाल धर्म सूत्र□ नमक लघु ग्रंथ में संकलित किया गया।

कुणाल ने आंध्र, कर्नाटक और तमिल क्षेत्र की ओर यात्रा की। ये क्षेत्र उस समय व्यापार और संस्कृति के महत्वपूर्ण केंद्र थे। उन्होंने प्रमुख नगरों जैसे अमरावती, कांचीपुरम, नागार्जुनकोंडा आदि का भ्रमण किया। स्थानीय राजाओं से संवाद कर धम्म को अपनाने की प्रेरणा दी। उनकी प्रेरणा से दक्षिण भारत में कई स्तूप और विहार बने जिनमें प्रमुख है: नागार्जुनकोंडा बौद्ध विश्वविद्यालय, अमरावती स्तूप (जहां कुछ शिल्पों में कुणाल के धम्म उपदेश अंकित है), कांची बिहार।

## कुणाल नाटक और सांस्कृतिक प्रभाव

राजा कुणाल की कथा पर आधारित □कुणाल नाटक□ संस्कृत और पालि साहित्य में एक प्रमुख स्थान रखता है। यह माना जाता है कि इस नाटक की रचना बौद्ध भिक्षुओं या मौर्यकालीन विद्वानों द्वारा की गई थी। इसमे कुणाल के नैतिक संघर्ष, न्याय के लिए प्रतीक्षा, और धर्म की विजय को दर्शाया गया है।यह नाटक भारतीय रंगमंच में नैतिकता और न्याय के प्रतीक के रूप में प्रसिद्ध हुआ। साहित्य, लोककथाओं और बौद्ध परंपरा में कुणाल का चित्रण आदर्शवादी और करुणामयी रूप में किया गया है। □कुणाल नाटक□ ने प्राचीन और मध्यकालीन भारत के रंगमंच पर प्रभाव डाला। इसमें नीति और धर्म का संतुलन दिखाया गया है। यह नाटक राजनीति बनाम धर्म की बहस का मंच है। इसकी संरचना संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुरूप है।

## इतिहास और साहित्य में कुणाल की छवि

**बौद्ध साहित्य में-** बौद्ध ग्रंथों जैसे 'दिव्यावदान', 'अशोकावदान', 'महावंश', और 'विसुद्धिमग्ग' में कुणाल का उल्लेख आदर्श राजकुमार के रूप में हुआ है। उन्हें बौद्ध धर्म के प्रचारक और अशोक के उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया गया। उनकी अंधता को कर्मफल या दुख का कारण नहीं, बल्कि ज्ञान की उत्पत्ति का स्रोत बताया

गया। बौद्ध तीर्थयात्री फाह्यान और ह्वेनसांग की यात्रा में कुणाल के प्रसंग का वर्णन मिलता है। उनके उपदेशों को चीन में कुनाल जिन्ग नामक पाठ के रूप में जाना जाता है।

**संस्कृत और पालि काव्य में-** कई संस्कृत कवियों ने कुणाल को "न्याय और नैतिकता का प्रतीक" माना है। उनके जीवन पर काव्य और नाटक रचे गए। उनका जीवन एक साहित्यिक कथानक के रूप में लोकप्रिय हुआ।

**आधुनिक इतिहास लेखन में-** आधुनिक इतिहासकार कुणाल की ऐतिहासिकता को किंवदंती और इतिहास के संगम के रूप में देखते हैं। कुछ विद्वान मानते हैं कि उनकी अंधता की कथा प्रतीकात्मक है। कुछ मानते हैं कि यह एक वास्तविक राजनीतिक षड्यंत्र था।

**सामाजिक मूल्यांकन**

कुणाल को भारत के "त्रासदी नायक" के रूप में देखा जा सकता है – एक ऐसा पात्र जो योग्य होते हुए भी सत्ता, वैभव और न्याय से वंचित रहा, फिर भी उसने अपना आत्मबल नहीं खोया। वे भारतीय संस्कृति में न्यायप्रियता, आत्मसंयम और निस्वार्थ धर्मसेवा का आदर्श बन गए। इतिहास और साहित्य में स्थान बौद्ध ग्रंथों जैसे दिव्यावदान, अशोकावदान, महावंश आदि में कुणाल की कथा करुणा और नीति की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। हालांकि उनके जीवन की घटनाओं की ऐतिहासिक पुष्टि सीमित है, फिर भी उनका चरित्र ऐतिहासिक स्मृति में जीवित है। आधुनिक इतिहासकार उन्हें एक प्रतीकात्मक शख्सियत मानते हैं, जो धर्म और सत्ता के टकराव का प्रतीक है।

**आधुनिक प्रासंगिकता**

आज के युग में जब नैतिकता और राजनीति में संघर्ष चल रहा हो, कुणाल का जीवन हमें सिखाता है कि शक्ति की नहीं, चरित्र की आवश्यकता है।अन्याय का उत्तर बदले से नहीं, सहिष्णुता से देना चाहिए।सत्ता नहीं, सेवा ही सर्वोच्च है।कुणाल की जीवनगाथा इस बात का प्रमाण है कि सच्चा नेतृत्व आत्मबल, नैतिकता और करुणा पर आधारित होता है, न कि केवल सत्ता पर।

**निष्कर्ष**

राजा कुणाल का जीवन मौर्यकालीन इतिहास का एक गहरा, करुण और प्रेरणादायी अध्याय है। उन्होंने अपने समय की राजनीति की क्रूरता को सहा, पर मन की शांति नहीं खोई। वे नायक इसलिए नहीं हैं कि उन्होंने राज किया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने त्याग, सहनशीलता और धम्म का जीवन जिया।❝ वे शासक भले न बन सके, पर मानवता के राजा बन गए

**----------संदर्भ ग्रंथ सूची----------**

1. कौळ, ई. बी. (संपा.). (1925). दीव्यावदान. कलकत्ता: बौद्ध ग्रंथ समाज।

2. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. (1956). अशोक के शिलालेख. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।

3. बील, सैम्युएल. (अनुवादक). (1884). सी-यू-की: ह्वेनसांग के पश्चिमी विश्व के बौद्ध अभिलेख. लंदन: ट्रूबनर एंड कंपनी।

4. दासगुप्त, सुरेंद्रनाथ. (1922). भारतीय दर्शन का इतिहास (खंड 1). कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस।

5. थापर, रोमिला. (2002). प्रारंभिक भारत: उद्भव से ई. सन् 1300 तक. बर्कले: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस।

6. पाठक, बिन्देश्वरी. (1990). अशोक और उसका युग. पटना: बिहार अनुसंधान परिषद।

8. जातक अनुवाद. (1925). कुणाल जातक. जातक कथाएँ (खंड 4) में. कलकत्ता: पाली ग्रंथ परिषद

9. भारतीय लोक साहित्य परिषद. (1989). उत्तर भारत की लोक कथाएँ: राजकुमार कुणाल की कथा. नई दिल्ली: आईसीएफपी।

10. वर्मा, शशिबाला. (2001). मौर्य प्रशासन और समाज. वाराणसी: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन।

11. गाइगर, विल्हेम. (अनुवादक). (1912). महावंश: श्रीलंका का महान इतिहास. लंदन: पाली ग्रंथ परिषद।

12. भारतीय विद्या भवन. (1954). मौर्य युग. बॉम्बे: बीवीबी प्रकाशन।

13. स्मिथ, विन्सेंट आर्थर. (1901). अशोक: भारत का बौद्ध सम्राट. ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस।